IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ऋतुसंहार में वर्णित पुष्प पादपों का वर्णन

डॉ० कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर

जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

संस्कृत साहित्य मे कालिदास विश्व-विख्यात कवि हैं। उनकी कविताओं की विशिष्टता विश्व में अद्वितीय मानी जाती है। लौकिक काव्य की दृष्टि से कालिदास अद्वितीय हैं। उनके काव्य में प्रकृति का अनुपम चित्रण मिलता है, जिसमें ऋतुओं का वर्णन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'ऋतुसंहार' कालिदास की प्रमुख कृति है जिसमें विभिन्न ऋतुओं के स्वरूप और उनके प्रभावों का अत्यंत सुंदर वर्णन किया गया है।

इस काव्य में विभिन्न पुष्पों, वृक्षों और वनस्पतियों का उल्लेख मिलता है, जो ऋतुओं के परिवर्तन के साथ अपनी शोभा बिखेरते हैं। कालिदास ने इन वनस्पतियों का वर्णन केवल सौंदर्य के लिए ही नहीं, बल्कि उनके वैज्ञानिक और पर्यावरणीय महत्व को भी ध्यान में रखते हुए किया है।

प्रकृति द्वारा सुसज्जित ऋतुसंहार में छः ऋतुओं का वर्णन किया गया है। इसमें ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत ऋतु का मनोहारी चित्रण है। इन ऋतुओं में विभिन्न प्रकार के पुष्प, लताएँ, वृक्ष और वनस्पतियाँ अपनी-अपनी विशेषताओं के साथ दिखाई देती हैं।

कालिदास ने पुष्पों के रंग, गंध और उनके उपयोगों का भी उल्लेख किया है। इनका वर्णन करते समय उन्होंने न केवल उनकी सुंदरता का चित्रण किया है, बल्कि उनके औषधीय गुणों का भी संकेत दिया है। इस प्रकार 'ऋतुसंहार' केवल एक काव्य कृति नहीं, बल्कि वनस्पति विज्ञान के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। ऋतुसंहार का वसन्त वर्णन भी अनुपमे है। वसन्त, योद्धा रूप में फूली हुई आम-मंजरीयों का अमोघ बाण लेकर अपने धनुष पर भ्रमरों की पंक्तियों की प्रत्यंचा चढ़ाकर उपस्थित हुआ है। ऋतुसंहार वस्तुतः प्रकृति में प्राप्त जड़त्व जीवन को उद्देलित करने वाले उपादानों की सज्जिता तथा सुरसता का मनोहरी काव्य है तथा कविकुलगुरु की अनन्य प्रतिभा का प्रतिबिम्बन।

वस्तुतः ऋतुसंहार में विविध प्रकार की वनस्पतियों तथा पुष्पों का जो वर्णन किया गया है, प्रस्तुत शोध-पत्र में इसी विषय पर एक वैज्ञानिक दृष्टि दी गई है। इसमें उल्लिखित पुष्पों का समय तथा वानस्पतिक नाम ही इस पत्र का विषय है। ऋतुसंहार के पहले सर्ग में ग्रीष्म वर्णन के सन्दर्भ में पुष्पों के आभरण तथा छत्र चन्दन का उल्लेख हुआ है [1]। नागरमोथा, [2] हाथियों द्वारा कमलों को उखाड़ फेंकने के सन्दर्भ, वृक्षों की डालियों के झुलसने तथा पूर्ण विकसित कुसुम्भी के पुष्पों [3] तथा सेमर के वृक्षों [4] का वर्णन हुआ है।

दूसरे सर्ग वर्षा-वर्णन में बादल की तुलना के सन्दर्भ में नील कमल की पंखुड़ियाँ [5], हिलाई हुई वेल्लरी के समान सुगन्धित घास के कोमल अंकों का ऊपर निकले हुए कदम्ब (कदम्बकुसुम) के पत्तों से लदी हुई तथा लताओं में बंधी हुई धरती की सुन्दर नायिका से तुलना [6], श्वेत-श्याम की हरी- हरी घास तथा नूतन किसलयों से सुसज्जित वृक्षों से सवल्लित होना [7], तथा नायिकाओं के केशपाशों की तुलना लतावल्ली से की गई है [8] कहा गया कि कदम्ब, केतकियों से भरे हुए जंगल को कम्पायमान करता हुआ और इनके पुष्पों की सुगन्ध तथा मेघों तथा चन्द्रमा की किरणों के सम्पर्क से शीतल बहने वाला

वायु किसे मदमस्त[9] कर रहा है। इस ऋतु में श्रृंगार के सन्दर्भ में नवनील, केसर, केतकी और कदम्ब के नये-नये पुष्पों की मालाएँ गूँथ कर वेणियों को सजाने का प्रचलन दिखाई देता है[10]। इस सन्दर्भ में वर्षा ऋतु में नायक की भाँति अपनी प्रेयसी के सिर को सुगन्धित करने के लिए नई-नई कलियों तथा मालती और मौलश्री के कुसुमों की माला गूँथ रहा है तथा नूतन कदम्ब के पुष्पों का कर्णाभूषण बना रहा है[11]। कवि ने वर्षा ऋतु को वृक्षों की शाखाओं तथा लताओं की सखी कहा।शरदऋतु-वर्णन-प्रसंग में कांस के पुष्प, पके हुए धान, कमल[12], बाँस की झाड़ियों, सप्तच्छद (छितवन) के वृक्षों का जंगल तथा मालती पुष्पों का वर्णन आया है[13] I मधुश्रेणी के पुष्पों से लाल धरती, पका धान युक्त खेत, कोविदार के वृक्ष[14], कमलिनियों का वर्णन हुआ है…। पुष्पों की सुगन्धता भी कदम्ब, कुटज, अर्जुन, सर्ज और नीम के वृक्षों को छोड़कर सप्तपर्ण (छितवन) के वृक्षों पर मानो बस गई[15]I शैफालिका के पुष्पों की मनोहारी सुगन्ध[16], कल्हार, सौगन्धिक, कमल और कुमुद के पुष्पों का वर्णन, घास का वर्णन, क्रमशः कमल, नीले कमल का वर्णन, दोपहरिया के पुष्पों, नीले कमल की तरह आँखों तथा कुमुद का वर्णन आया है।[17]

महाकवि के हेमन्त ऋतु में जौ, गेहूँ, चना तथा लोथ के वृक्ष के फूलने का सन्दर्भ, धानों के पकने तथा कमल के लुप्त होने का वर्णन है।[18] क्रमशः कुमुद पुष्प[19], घास[20], धान[21] तथा हेमन्त ऋतु में नीले कमल के सुशोभित होने का सन्दर्भ आया है[22]I कालिदास ने कहा कि यह पकने वाली प्रियंगु-लता उसी प्रकार पीली हो गयी है जैसे आजकल अपने प्रेमी से अलग हुई युवती विलासिनी पीली पड़ जाती है।[23] कवि ने पुष्पासव का भी वर्णन किया है[24] तथा पुनः इस सर्ग में कहा कि गाँवों के समीप पके हुए धानों के खेत लहराते हैं।

क्रमशः कवि ने शिशिर वर्णन-प्रसंग में धान और ईख[25], पुष्पासव का पान, इत्र-फुलेल व मालाओं, इस ऋतु में कामिनियों का केसर से अनुरंजित उष्मा से विह्वल कामिनी स्त्रियों का निद्रावश गाढ़ आलिंगन[26], सुवर्ण कमल[27] तथा गुड़ से निर्मित मिठाइयों तथा स्वादु धान और ईख की सुगन्ध चारों ओर फैलने की बात कही।

ऋतुसंहार के अन्तिम सर्ग में वसन्त कवि ने आम्र-मंजरीयों[28], पुष्पित वृक्षों, जल में विकसित कमलों[29], विलासिनी रमणियों द्वारा लाल कुसुम्भ के फूलों से रंगी साड़ियों का पहनना[30], स्त्रियों द्वारा कानों में नूतन कनेर, अलकों में अशोक के पुष्प तथा नवमल्लिका (चमेली) का अलंकरण सौन्दर्यवर्धक बनता था[31]। या लेप के सन्दर्भ में प्रियंगु, कालियक, केसर तथा चन्दन का वर्णन हुआ है[32]। वसन्त ऋतु में अशोक के वृक्ष ऊपर से नीचे लाल कोपलों से युक्त हो गए हैं[33]। सुन्दर रमणियों केमुख के समान सुन्दर लगने वाले कुवक पुष्पों का उल्लेख हुआ है।[34] कालिदास ने पलाश के वन को लाल चूर्ण से सुसज्जित नववधू के समान कहा[35] और तोते की चोंच के समान पलाश पुष्पों को केसर के पुष्पों का भी उल्लेख हुआ है।

कवि ने कहा कि यह वसन्त ऋतु हृदय को उत्सुक बनाने वाले कोकिल के मनोहर गीतों[36] से अपने समय में खिलने वाले कुन्द पुष्प की कान्ति से तथा लाल भुजंग के समान वृक्षों के पल्लवों से क्रमशः विलासिनी रमणियों के सुन्दर वचन, उनकी मुस्कुराहट के समय की दाँतों की शोभा एवं उनकी कोमल के समान कोमल रंगी की हथेलियों की मानो खिल्ली उड़ा रहा है[37] I पुनः कमल लोभपुष्प, नूतन कुवक का उल्लेख हुआ है।

अन्त में कवि ने कहा अमृत से भरे लाल अधरों के समान रक्त अशोक के पुष्पों से मदमस्त भ्रमरों की गुंजार से, दाँतों की चमकती हुई पंक्ति के समान उज्ज्वल कुन्द के पुष्पों से निर्मित हारों, अच्छी तरह के खिले हुए कमल के समान मनोहर मुखों से और आम्र-मंजरी की सुगन्ध से भरे हुए मन्द-मन्द बहने वाले पवन श्रृंगार की शिक्षा देने वाला यह कामदेव का मित्र वसन्त आप सब की रक्षा व कल्याण करे[38] I

वस्तुतः ऋतुसंहार में लोध्र, कमल व स्वर्ण कमल, कुमुद, प्रियंगु लताओं नागर मोथा, कुसुम्भी के पुष्प, सेमर, कन्दली (कुक्कुटाण्ड), बिल्वफल, कदम्ब, सर्ज, केतकी नवीन, केसर, केतकी, मालती, नवीन, केसर, केतकी, मालती, मौलसिरी, कांस, बाँस की झाड़ियाँ, सप्तच्छद (छितवन) मध्याह्न में खिलने वाले लाल पुष्पों, कोविदार के वृक्ष, कुटज, अर्जुन, नीम, शेफालिका, कल्हार, सौगन्धिक, आम व आम्रमंजरीयाँ, कनेर, केसर, चन्दन, कुवक, पलाश, अशोक तथा कुन्द इत्यादि अनेकों पुष्पों का वर्णन आया है। इसमें ईख, जौ, घास तथा पके हुए धान के खेतों का भी सजीव वर्णन किया गया है। वस्तुतः कालिदास ने जिन पुष्पों का वर्णन किया है वे सब वनस्पति शास्त्र के आज भी पठनीय विषय हैं।

कालिदास के ग्रन्थों में विभिन्न ऋतुओं में पुष्पित और पल्लवित होने वाले जिन वृक्षों तथा लताओं का वर्णन मिलता है, उन्हें एक वनस्पति-विज्ञान की दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है। वनस्पति वैज्ञानिक किसी भी पौधे को द्विनाम पद्धति के अन्तर्गत रखते हैं। ये नाम लैटिन भाषा पर आधारित होते हैं। यह अन्तर्राष्ट्रीय नियम है— इन वृक्षों और लताओं को उनके वास स्थान, उनके पुष्पित तथा पल्लवित होने के समय को ध्यान में रखते हुए, आधुनिक उद्यानों में लगाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इन पौधों पर इस प्रकार की पट्टिकाएँ लगाई जानी चाहिए, जिनमें संस्कृत भाषा में वर्णित तथा वानस्पतिक नाम के साथ उनका सम्पूर्ण विवरण हो। इस प्रकार हम उन पौधों को आज के लोगों से परिचित करा सकते हैं।

उदाहरणार्थ वनस्पति शास्त्र के अन्तर्गत कई पुष्पों के नाम इस प्रकार हैं—

लोढ़ – Simplax racemosa (सिम्प्लैक्स रेसिमोसा)

आम (चूत) – Mangifera Indica (मेंजीफेरा इंडिका)

कोविदार – Bauhinia purpurea (बाउहिनिया परप्यूरीया)

अर्जुन – Terminalia arjuna (टर्मिनेलिया अर्जुना)

सप्तपर्ण (छितवन) – Alstonia scholaris (एल्स्टोनिया स्कोलारिस)

अशोक (सीता अशोक) – Saraca Indica (साराका इंडिका)

नीम – Azariehata indica (एजाडिरैक्टा इंडिका)

पलाश – Butea monosperma (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा)

सेमल – Bombax ceiba (बॉम्बेक्स सीबा)

कदम्ब – Anthocephalus indicus (एन्थ्रोसेफेलस इंडिकस)

कुरक – Lawsonia alba (लॉसोनिया एल्बा)

केतकी – Pandanus odortissimum (पैन्डेनस ओडोर्टिसिमम)

मौलश्री (बकुल) – Mimusopus elengi (माइमुसोपस एलेंगी)

बांस – Bambura sp (बैम्बुसा स्पीशीज)

चन्दन – Santalum album (सैन्टलम एल्बम) कनेर – Nerium sp (नेरियम स्पीशीज)

नागर मोथा – Cyperus difformis (साइपेरस डिफोर्मिस)

कुंद – Jasminum pubescence

कमल – Nelumbium speciosum (नीलम्बियम स्पेसिओसम)

ईख – Saccharum officinarum (सैकरम ऑफिसिनरम)

जौ – Hordeum vulgare (हॉर्डियम वल्गरे)

धान – Oryza sativa (ओराइजा सैटिवा)

केसर – Croccus sativs (क्रोकस सैटिवस)

मालती – Hiptage benghalenisis (हिप्टेज बंगालेनिसिस)

वस्तुतः पौधों, लताओं तथा वृक्षों के विभिन्न ऋतुओं में पुष्पित तथा पल्लवित होने से उठने वाले सौन्दर्य-बोध के अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण दूर करने में इनका विशेष योगदान है। आधुनिक युग में जबकि शहरीकरण तथा औद्योगिकीकरण ने मनुष्य को प्रकृति से दूर किया है तथा उसके जीवन में वायु, ध्वनि, जल व मृदा प्रदूषण जैसा विष घोलते हैं, ऐसे में वृक्षों की उपयोगिता इन्हें दूर करने में भी सहायता करती है। वैज्ञानिक तथ्यों से यह स्पष्ट हो चुका है कि मार्गों के पास लगाए जाने वाले अशोक, अर्जुन, चितवन, नीम, पीपल, बरगद तथा पाकड़ आदि वृक्ष, प्रदूषण करने वाले विषों को पी लेते हैं तथा 'प्रदूषण-कुंड' (Pollution sink) का कार्य करते हैं। ध्वनि और वायु-प्रदूषण दूर करने में इन पौधों का विशेष योगदान है।

संदर्भ :

१. ऋतु०/ग्रीष्म/१/४

२. ऋतु०/ग्रीष्म/१/१७

३. ऋतु०/ग्रीष्म/१/२४

४. ऋतु०/ग्रीष्म/१/२६

५. ऋतु०/वर्षा/२/२

१३४

६. ऋतु०/वर्षा/२/५

७. ऋतु०/वर्षा/२/८

८. ऋतु०/वर्षा/२/१२

९. ऋतु०/वर्षा/२/१७

१०. ऋतु०/वर्षा/२/२१

११. ऋतु०/वर्षा/२/२५

१२. ऋतु०/शरद/३/१

१३. ऋतु०/शरद/३/२

१४. ऋतु०/शरद/३/५, ६

१५. ऋतु०/शरद/३/१३

१६. ऋतु०/शरद/३/१४

१७. ऋतु०/शरद/३/१८

१८. ऋतु०/शरद/४/१

१९. ऋतु०/शरद/४/४, २

२०. ऋतु०/शरद/४/७

२१. ऋतु०/शरद/४/८

२२. ऋतु०/शरद/४/४, १

२३. ऋतु०/शरद/४/११

२४. ऋतु०/शरद/४/१२

२५. ऋतु०/शिशिर/५/१

२६. ऋतु०/शिशिर/५/९

२७. ऋतु०/शिशिर/५/१३

२८. ऋतु वसन्त ६/१, ४

२९. ऋतु०/वसन्त/६/२

३०. ऋतु०/वसन्त/६/५

३१. ऋतु०/वसन्त/६/६

३२. ऋतु०/वसन्त/६/१४

३३. ऋतु०/वसन्त/६/१८

ऋतुसंहार में उल्लिखित पुष्पों पौधों का पुनर्निरीक्षण..... १३५

३४. ऋतु०/वसन्त/६/२०

३५. ऋतु०/वसन्त/६/२१, २२

३६. ऋतु०/वसन्त/६/२३

३७. ऋतु०/वसन्त/६/२९

३८. ऋतु०/वसन्त/६/३६

-